SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

आध्यात्मिकता परम सेवा

सनातन दिव्य

श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल मानवीय वेदना और विषाद के सागर में कमल पुष्प की भांति प्रकट हुआ है!

वैष्णव भक्ति आचार्यों की परंपरा का अनुगमन करते हुए हमारे जीवन का मूल उद्देश्य **जानकीवल्लभो विजयते** अर्थात भगवान् श्री राम और श्रीमती जानकी तथा भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीमती रुक्मिणी, दिव्य युगल दम्पति का जीवन चरित्र समाज के लिए आदर्श के रूप में स्थापित करना है.

श्री मणि राम दास छावनी जोकि श्री अयोध्या में है, हमारी प्राण शक्ति का आध्यात्मिक केंद्र है. जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज से आरम्भ हुई इस गुरू शिष्य परंपरा जिसमें महान आध्यात्मिक संत–कवि तुलसीदास, कबीरदास आदि नामी–गिरामी शिष्य हैं, उच्च कोटि के सुप्रसिद्ध महात्मा हुए हैं. आध्यात्मिक नक्षत्र के सिद्ध गुरुओं की छत्रछाया में **श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल** भविष्य के मानव के आध्यात्मिक कल्याण की बहुआयामी योजनाओं पर आपके आशीर्वाद की कामना करता है.

गुरु परंपरा

जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज

जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज भगवान् श्री राम के करूणामय अवतार हैं। वो लगभग 800 वर्ष पूर्व समाज में एक **आदर्श** की संरचना हेतु अवतरित हुए। इस महतीं लक्ष्य के लिए उन्होंने श्री रामानंद संप्रदाय की स्थापना की। जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य के सुविख्यात शिष्यों में कबीरदास (मुस्लिम), रैदास (मोची), धन्ना (जाट), सेन (नाई), पिनारा(वैश्य), पीपा (क्षत्रिय) आदि सभी वर्णों के उच्च कोटि के भक्त रहे। इस शिष्य मुकुटमाला के अन्य मणि हैं–गोस्वामी तुलसीदास जी (इन्हें जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी के एक शिष्य ने 5 वर्ष के एक अनाथ बालक के रूप में पाया था जिसकी जाति का कोई अता–पता नहीं था), मीराबाई (जोकि क्षत्रिय थी और रैदास की शिष्या थीं), नाभादास (इस बालक संत को जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य के एक शिष्य ने जब पाया तो इनके भी वर्ण के बारे में कोई जानकारी नहीं थी)। जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी का भक्ति और समाज के लिए योगदान अमूल्य है क्योंकि उन्होंने उस समय जात–पात में बंटे समाज के सभी वर्णों से अपने अतुलनीय शिष्य तैयार किये। उन्होंने तत्कालीन भारतीय संस्कृति को उस अनुपम दर्शन की कसौटी दी जोकि सदियों से धर्म का मूल सिद्धांत है :

जात–पात न पूछे कोई।
जो हरि को भजे सो हरि को होई॥

सांस्कृतिक धरोहर

परम पूज्य श्री गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज

रामानंद संप्रदाय के महान वैष्णव संत–कवि तुलसीदास भगवान् राम के प्रति अविस्मरणीय भक्ति भाव के लिए विख्यात हैं। उन्होंने सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामचरितमानस की रचना की। यह प्रभु श्रीराम के जीवन चरित की संस्कृत रामायण की प्रस्तुति को हिंदी मिश्रित अवधी बोली में पुनः उकेरने का सुमधुर प्रयास है।

तुलसीदास जी ने अपने जीवन काल का अधिकांश भाग पवित्र काशी नगरी में बिताया। उन्होंने वहां श्री हनुमान जी को समर्पित संकटमोचन मंदिर का निर्माण भी किया। तुलसीदास जी ने ही घर–घर तक रामायण को पहुँचाने के लिए सर्वप्रथम लोकप्रिय कथा नाटक – **रामलीला** के रूप में इसे आरम्भ किया।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

धर्मध्वजा के वाहक

गुरु परंपरा सिद्धाश्रम

परम पूज्य
स्वामी श्री रामप्रसादाचार्य जी
महाराज (विन्दुगध्याचार्य)

अनंत श्री विभूषित
स्वामी श्री मणिराम दास जी
महाराज

अनंत श्री विभूषित
स्वामी श्री वैष्णव दास जी
महाराज

अनंत श्री विभूषित
स्वामी श्री राम चरण दास जी
महाराज

अनंत श्री विभूषित
स्वामी श्री राम शोभा दास जी
महाराज

अनंत श्री विभूषित
स्वामी श्री राम मनोहर दास जी
महाराज

वर्तमान पीठाधीश्वर
अनंत श्री विभूषित
परम पूज्य स्वामी
श्री नृत्य गोपाल दास जी
महाराज
अध्यक्ष
श्री मणिराम दास छावनी
श्री अयोध्या जी

परम पूज्य स्वामी
श्री कमल नयन दास जी
महाराज
उत्तराधिकारी
श्री मणिराम दास छावनी
श्री अयोध्या जी

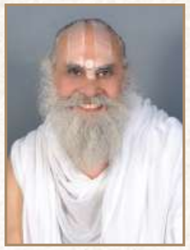

परम पूज्य
स्वामी श्री कृपालु राम दास जी
महाराज
सचिव
श्री मणिराम दास छावनी
श्री अयोध्या जी

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

स्वामी महेन्द्र दास

संस्थापक अध्यक्ष

बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) में 1990 में जन्में बालक महेन्द्र ने अपने जन्म के बीस वर्ष के भीतर ही भारतीय धर्म के शीर्ष पड़ाव संन्यास को अंगीकार कर लिया। कभी उत्तर प्रदेश को राज्य स्तर पर क्रिकेट में प्रतिनिधित्व देने वाले स्वामी महेन्द्र दास अब आनेवाली पीढ़ियों के उत्थान के लिए आध्यात्मिक प्रयत्नों का नया क्रीडा–स्थल तैयार करने में लगे हैं। इनके बहुमुखी कार्यकलापों का उद्देश्य **विश्व को जीने के लिए बेहतर स्थान** बनाने के लिए आध्यात्मिक नागरिकों का नवनिर्माण है।

मिशन (कार्ययोजना)

हम ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं जहाँ प्रगति का आधार नैतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी का पालन करना है। आपसी सहयोग,एक–दूसरे के अधिकारों के लिए आदर भाव और समाज की संभाल के लिए समग्र दृष्टिकोण– यह हम स्वयं का आचरण प्रस्तुत करके सिखाने का भाव रखते हैं।

विज़न (दूरदर्शी सोच)

हम ऐसे विश्व की परिकल्पना करते हैं जो भोगवादी प्रवृतियों के स्थान पर आध्यात्मिक गतिविधियों पर केन्द्रित हो। भविष्य की पीढ़ियों के लिए आने वाले वर्षों में,जीवन का अस्तित्व मानवता के मूलभूत मूल्यों पर ही केन्द्रित करना होगा अन्यथा समाज का विकास रुक जाएगा।

हम जीवन की आशावादिता के पक्ष में कार्य करते हैं।

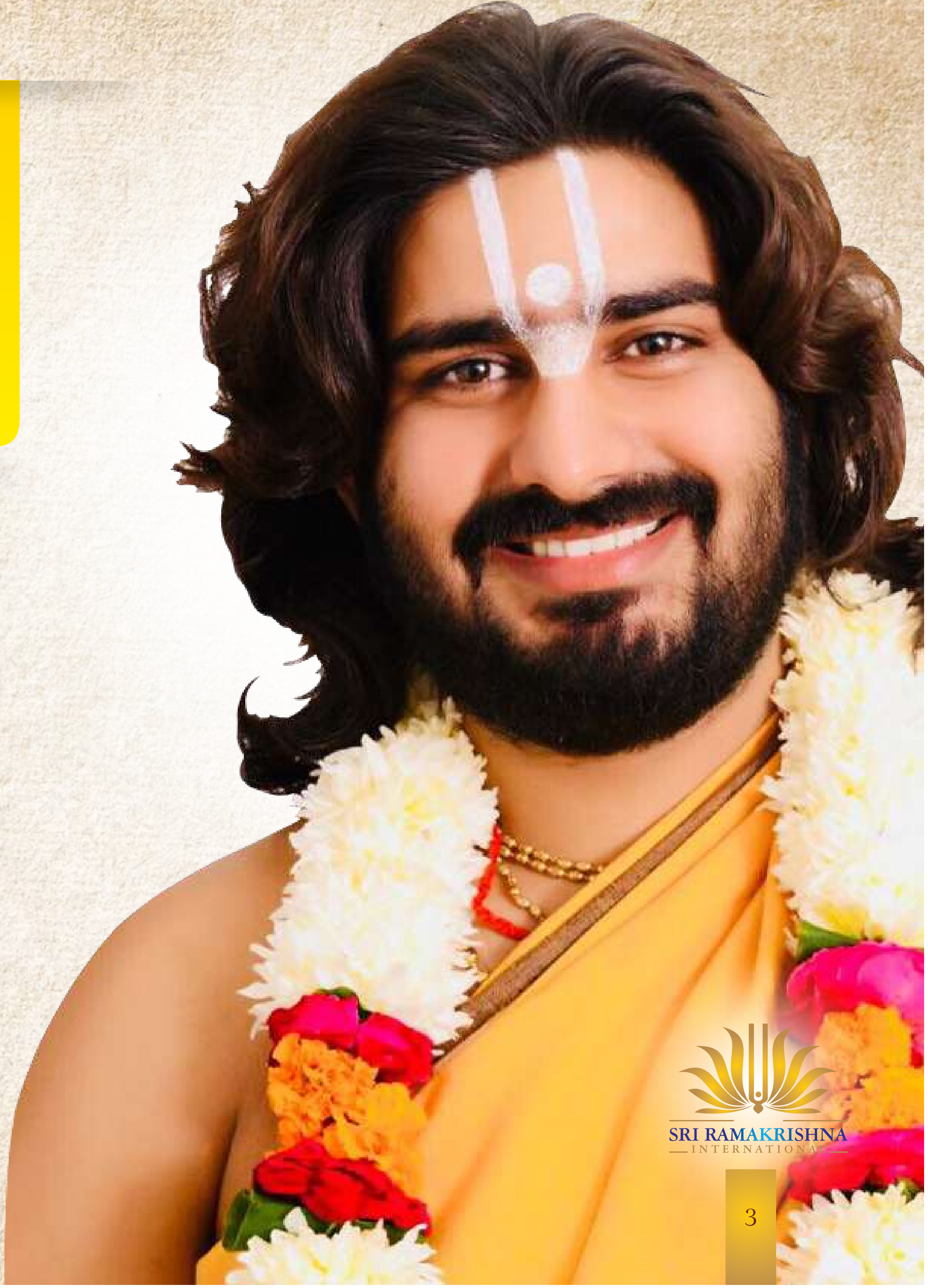

SRI RAMAKRISHNA INTERNATIONAL

उद्देश्य

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

महोपनिषद्

यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है,
इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं।
उदार हृदय वाले लोगों की तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

हमारे जीवन–मूल्य हमें निर्मित करते हैं। अपनी इन मान्यताओं के अनुसार ही हम जीवन में निर्णय लेते हैं!

हमारी सर्वोपरि मान्यता है–इस समाज के लिए जो परम आवश्यक हो,उसी से हमें जीवन के लिए उद्देश्य और दिशा मिले।

समाज को एक ऐसे परिवेश की आवश्यकता है जिसमें परस्पर सहयोग और समग्र विकास जैसे उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का आधार ही समाज के फलने–फूलने का मानदंड बने। इस वातावरण की रचना के लिए, हमें अपने महान शास्त्रों के मार्गनिर्देशन में जीवन को सुदृढ़ता देने वाले कदमों के लिए पहल करनी होगी, जैसे **वसुधैव कुटुम्बकम** (समस्त संसार एक परिवार है) का भाव।

हम अपने महान मनीषी पूर्वजों की मानवतावादी मूल्यों की धरोहर को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं जिससे मानवजाति की श्रेष्ठ वंशावली का निर्माण कर सकें।

गुरुकुल

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरु स्तोत्र

गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु देव महेश्वर शिव हैं,
गुरु ही वस्तुतः परब्रह्म परमेश्वर हैं; ऐसे श्रीगुरु के प्रति मेरा नमन है।

शिक्षा जोकि ज्ञानवान सभ्यताओं की मूलतः आत्मा है; मानवजाति को मौलिक बोध कराने हेतु मुक्त करती है!

हमारा प्रयास है कि सनातन आत्मा से परिपूर्ण उपयुक्त वैदिक शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षण प्रणाली की तकनीक, दोनों, के अनूठे संयोजन से भविष्य का नवनिर्माण करें। **वैदिक शिक्षा का मूल आधार मानव का निर्माण है। ऋग्वेद**–विश्व के प्रथम आध्यात्मिक साहित्य में यह सारगर्भित कथन प्रकाशित हैः

शिक्षा वो उपलब्धि है जो व्यक्ति को आत्म–निर्भर और निष्काम बनाती है।

आधुनिक शिक्षा मानव जीवन की श्रेष्ठता के मानदंड को और पुष्ट करती है। समुचित शिक्षा की समझ से कोई भी अपने जीवन की नई परिभाषा गढ़ सकता है। वास्तव में तो, प्रकृति ने विद्यार्थियों को प्रतिभा की नोटबुक के रूप में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से देखें तो प्रत्येक बालक विलक्षण है।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

ऐसी कच्ची प्रतिभाओं को उत्कृष्ट प्रतिभा संपन्न नागरिकों में परिवर्तित करना ही **श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल** की विशेषता है।

ट्रस्ट के गुरुकुल में वैज्ञानिक शिक्षा का वातावरण, बहुविध खोजपरक गतिविधियाँ और वर्षपर्यंत दूरदर्शिता–भरे परामर्श की व्यवस्था है। इस व्यवस्था से प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जीवन,शिक्षा और करियर में अपनी प्रतिभा का भरपूर प्रयोग करने के पूरे अवसर उपलब्ध हो जाते हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है
कि गुरुकुल विद्यार्थियों को
उनकी प्रतिभा के क्षेत्र में अग्रणी के रूप
में गढ़ने की कुशलता रखता है–
कुलीन वर्ग के रूप में वे चाहे ताकत के गलियारे में
नियुक्त हों, सुदूर ठिकानों पर किसी समस्या के समाधान
के लिए निश्चित किए गए हों, कॉर्पोरेट जगत में आगे
निकलने की होड़ में शामिल हों या हरे–भरे वातावरण में
प्रकृति की देखभाल से जुड़े प्रकल्पों में कार्यरत हों।

हम अपने समय से आगे के ऐसे गुरुकुल हैं जो भविष्य के मानव के निर्माण में जुटे हैं।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल गुरुकुल – शिक्षा के क्षितिज का विस्तार!!

विशाल आधारभूत संरचना
- 66,000 वर्ग गज भूमि
- बलरामपुर एवं वृन्दावन में स्थल

ध्यान हॉल एवं योग केंद्र
- मानसिक क्षमता और शांति का विकास
- प्रतिरोधक क्षमता और सहन-शक्ति का गठन

सर्वश्रेष्ठ शिक्षा का सुअवसर
- सीबीएसई से सम्बद्ध सह–शिक्षा विद्यालय
- प्रभावी पाठ्यक्रम

खेलकूद सुविधाएँ
- चरित्र और टीम भावना का गठन
- नेतृत्व और अनुशासन को प्रोत्साहन

श्रीरामकृष्ण इंटरनेशनल

गुरुकुल

विश्व-स्तरीय अध्यापक मण्डली
- अनुभवी शिक्षक
- मानवीय संवाद कौशल

स्वास्थ्य संभाल / परामर्श केंद्र
- स्वास्थ्य का समग्र विकास
- मानसिक संवेदनशील विषयों पर परामर्श

गुरुकुल गौशाला एवं शाक उद्यान
- गौ सेवा से सौगात
- प्रकृति से पोषण

नवीनतम प्रयोगशाला
- विविध विषयों के लिए बहुउपयोगी
- उच्च सुरक्षा मापदंड

परिपूर्ण लाइब्रेरी
- पुरातन एवं आधुनिक ज्ञान की मञ्जूषा
- विद्वानों के लिए समुचित वातावरण

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

गौशाला

वशां देवा उपजीवन्ति वशां मनुष्या उत।
वशेदं सर्वम् अभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति।।

अथर्ववेद १०.१०.३४

देव अथवा विद्वतजन इस दिव्य गौमाता के दूध, घी आदि से ही अपना जीवन चलाते हैं। सामान्य मनुष्यों का जीवन निर्वाह भी इसी के दूध, घी आदि से होता है। इस जगत में जहां तक सूर्य देखता है अर्थात् जहां तक सूर्य का प्रकाश पहुंचता है वहां तक यह दिव्य गौमाता सब कुछ है। जगत में सूर्य का प्रकाश सब स्थानों पर पहुंचता है इसलिए सर्वत्र इस गौमाता की सत्ता विद्यमान है।

भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों और बहुत से पश्चिमी विद्वानों ने यह रेखांकित किया है कि गाय ऐसा सर्वश्रेष्ठ प्राणी है जिसमें सभी देवताओं का वास है। भारतीय आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार,मानव जीवन के आधारभूत चार पुरुषार्थ यथा धर्म(कर्तव्य), अर्थ(वाणिज्य), काम(कामनाएँ) और मोक्ष (मुक्ति) गाय की सेवा से प्राप्त किये जा सकते हैं।

हमारी गौशालाएं गौमाता की सेवा के ऐसे पावन अवसर उपलब्ध कराती हैं जिससे कि उनकी सेवा करने वाले की सभी कामनाएं पूरी होती हैं और उसका चहुँमुखी विकास होता है।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

गौमाता न केवल शुभ और पवित्र हैं; वे हर प्रकार से मानव को शुभ फल प्रदान करनेवाली हैं। गौमाता का दूध अन्य किसी प्राणी की तुलना में मानव प्रजाति में माँ के दूध से बहुत समानता रखता है। गाय का डीएनए मानव के डीएनए से बहुत मिलता–जुलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि गाय के डीएनए की संरचना प्रकृति में ही इस प्रकार की है कि गाय से प्राप्त होनेवाले दूध, दही, पनीर, मक्खन और घी से लाभ लेकर मनुष्य समग्र जीवन जी सके।

वैज्ञानिकों के पास निश्चित प्रमाण हैं कि गाय का दूध, विशेष रूप से, मानव मस्तिष्क के सूक्ष्म तंतुओं के निर्माण के लिए अति आवश्यक है; इससे ही श्रेष्ठ ज्ञान–**दिव्य ज्ञान** की सूक्ष्मताओं को कोई समझ सकता है।

समाज की प्रगति के लिए गौसेवा का इसलिए विशेष स्थान है।

श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल की यह करबद्ध प्रार्थना है कि गौशालाओं का सुदृढ़ जाल बिछाने के लिए और मानव प्रजाति के कल्याण के लिए गौ–संस्कृति के संवर्धन हेतु सभी सज्जन आगे आवें और पुर्ण सहयोग करें।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

स्वास्थ्य सेवाएं

जो स्वस्थ है उसके पास आशा का बल है;
और जिसके पास आशा है उसके पास सब कुछ है!

ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।

वृहदारण्यकोपनिषद् ।।

सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

भारत दिन–प्रतिदिन नौजवान होता ऐसा देश है जिसके पास सदाबहार आयुर्वेद पद्धति के साथ–साथ प्राकृतिक चिकित्सा, योग–ध्यान और पारंपरिक घरेलु नुस्खों की आपस में गुंथी सम्पूर्ण चिकित्सा प्रणाली है जोकि सदियों से चली आ रही है। इस विशाल राष्ट्र की स्वास्थ्य सम्बन्धी जरूरतों की नब्ज पर एक्यूप्रेशर, मालिश, कल्प– उपवास के संग स्थानीय वैकल्पिक उपचार के तरीकों ने भी अपनी पकड़ जमा रखी है। हालाँकि, तेजी से बढ़ते शहरीकरण और जीवनशैली के बदलावों के कारण जनसँख्या का बहुत बड़ा हिस्सा गंभीर स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थितियों का सामना करने को मजबूर है।

SRI RAMAKRISHNA INTERNATIONAL

इसलिए **श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल** ने इस महान राष्ट्र के सम्मानीय वासियों की स्वास्थ्य संभाल का बीड़ा उठाया है। इसके लिए हमने दो स्तर पर काम करने की रणनीति बनाई है। पहली,हम जरुरतमंदों के घर–घर जायेंगे। हम उन्हें बीमारी से बचाव, उसकी पड़ताल और उसके उपचार के बारे में सबसे अच्छे तरीके सुझायेंगे। इस काम में,एक पूरी तरह से समर्पित चलती–फिरती यानी मोबाइल स्वास्थ्य संभाल टीम जुटी रहेगी।दूसरा प्रयास, ऐसे कम खर्चीले स्वास्थ्य चिकित्सा केंद्र खोलने के लिए किया जायेगा जहाँ रोजमर्रा की चिकित्सीय जांच,छोटे–मोटे ऑपरेशन और गंभीर रोगियों को जरूरी देखभाल के बाद आगे बड़े अस्पतालों की तरफ भेजने के काम किये जायेंगे।

हमारा ध्यान इस ओर रहेगा कि आम लोगों की अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढे। इसके लिए हम आध्यात्मिक–धार्मिक ग्रंथों एवं साहित्य से वैज्ञानिक सूत्रों तथा मार्गदर्शन को आधार बनाने को प्राथमिकता देंगे। वृद्धों की देखभाल, महिलाओं व बालकों को जरूरी परामर्श तथा परिवार के पुरुष सदस्यों को बुरे व्यसनों–गुटका, धूमपान, शराब और अन्य प्रतिबंधित पदार्थों के सेवन से बचाना हमारा प्राथमिक सरोकार रहेगा।

स्वास्थ्य एक सामाजिक सरोकार का विषय है,इसलिए इसे इसी सोच से देखा जाना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति की अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, उसे स्वीकार करने की समझ और फिर उसके लिए की जाने वाली पहल की सोच को ही श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल अपने प्रयासों का केंद्रबिंदु मानता है। एक राष्ट्र का स्वस्थ होना उसकी उच्चता के सभी मापदंडों के लिए आदर्श कसौटी है। हम इसी ध्येय भावना के साथ कार्य कर रहे हैं जिससे कि इसे वास्तविकता में साकार कर पायें।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

श्री सेवा प्रसादम

प्रसाद के रूप में श्री भगवान भक्तों को अपना अमृत तत्व चखाने की कृपा करते हैं!

यज्ञशिष्टाशिन: सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषै:।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।
भ.गी.३.१३

भगवान् के भक्त सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं, क्योंकि वे यज्ञ में अर्पित किये भोजन (प्रसाद) को ही खाते हैं। अन्य लोग, जो अपनी इन्द्रिय सुख के लिए भोजन बनाते हैं, वे निश्चित रूप से पाप खाते हैं।

ऐसे प्रसाद को निरंतर ग्रहण करना जिसे सर्वप्रथम श्रीभगवान को भोग के रूप में समर्पित किया गया हो, तीन पवित्र कार्य करता है। यह इन्द्रियों को शुद्ध करता है,जीवन ऊर्जा को बल देता है और व्यक्ति में दिव्य गुण विकसित करता है। श्री सेवा प्रसादम का मूल भाव उन असंख्य आत्माओं का उद्धार करना है जो भौतिकता के जाल में फँसी है। प्रसाद की योजना बनाने,उसे तैयार करने और फिर उसके वितरण करने से व्यक्ति में दिव्य योग्यताएं

प्रकट होती हैं और ऐसा करके कोई भी आत्म–साक्षात्कार के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। भंडारा या समुदाय भोज अथवा लंगर को इसीलिए सभी धर्म–सम्प्रदायों में विशेष स्थान दिया गया है क्योंकि प्रसाद की बड़ी महिमा है वर्ना इस दृष्टि से न देखें तो वह केवल बड़े पैमाने पर तैयार किया गया भोजन ही तो है।

वास्तव में,प्रसाद को उच्च भक्त और महात्मा श्रीभगवान की साक्षात् उपस्थिति (प्रभु के साक्षात् दर्शन) ही मानते हैं। जब यह भाव किसी के भी भीतर आ जायेगा तो भला कौन प्रसाद के रूप में प्रभु की कृपा पाने से स्वयं को वंचित रखना चाहेगा!

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

पर्यावरण सुरक्षा

यह पृथ्वी हमारे पूर्वजों से मिली हुई विरासत नहीं है;
बल्कि यह हमारा ऋण है जो हमें अपने बच्चों को चुकाना है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ॥

ईशोपनिषद

इस ब्रह्मांड के भीतर की प्रत्येक जड़ अथवा चेतन वस्तु भगवान् द्वारा नियंत्रित है और उन्हीं की संपत्ति है। अतएव मनुष्य को चाहिए कि अपने लिए केवल उन्हीं वस्तुओं को स्वीकार करे, जो उसके लिए आवश्यक है और जो उसके भाग के रूप में नियत कर दी गई हैं। मनुष्य को यह भली–भांति जानते हुए कि अन्य वस्तुएं किसकी हैं, उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए।

हमारे पास वृक्षारोपण की, जटिल स्थानों पर जमीन का कटाव रोकने की, ग्रीनहाउस दुष्प्रभाव से मुकाबले के लिए पर्यावरण हितैषी सामग्री का उपयोग करने, आर्गेनिक खाद्य पदार्थ उगाने और लुप्त होने वाले संसाधनों को बचाने के लिए रणनीति बनाने जैसी कई योजनायें हैं।

इसके अतिरिक्त जोहड़–बावड़ी (जल के सतत् स्त्रोत), तालाब और गाँव के स्तर पर और शहरीकरण की दौड़ में पीछे छूट गए स्थानों के अन्य जल संसाधन का पुनर्नवीकरण करना हमारे उपकर्मों में प्राथमिकता रखता है।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

आपदा प्रबंधन

मानवता उस समय हाथ थामती है जब आपदा आशाओं का दामन झटक देती है।

चिन्तनीया हि विपदां आदावेव प्रतिक्रिया ।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्त वान्हिना गृहे ।।

संस्कृत सुभाषित

जिस प्रकार घर में आग लग जाने पर कुँआ खोदना आरम्भ करना युक्तिपूर्ण (सही) कार्य नहीं है उसी प्रकार विपत्ति के आ जाने पर चिन्तित होना भी उपयुक्त कार्य नहीं है। तात्पर्य यह कि किसी भी प्रकार की विपत्ति से निबटने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

अपने समकालीन मनुष्यों के आपातकालीन समय में- राष्ट्रीय आपदा जैसे बाढ़, भूकंप या सुनामी या फिर किसी और प्रकार का प्रकृति का प्रकोप हो, **श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल** सहायता के लिए हाथ बढ़ाए तैयार है। मानव जीवन सबसे मूल्यवान संसाधन है। अन्य सभी संसाधनों को प्रकृति के इस अनमोल संसाधन—मानव को बचाने और संरक्षण देने के लिए तत्पर रहना चाहिए। हमारे प्रतिबद्ध, अनुभवी और प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओं की टीम पूरे उपकरणों के साथ हर प्रकार की आपातकालीन स्थितियों और प्रकृति के कहर से बचाने के लिए सजग है।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

वस्त्र सहायता

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ।।

भ.गी.१७.२०

जो दान कर्तव्य समझकर, किसी प्रत्युपकार की आशा के बिना, समुचित काल तथा स्थान में और योग्य व्यक्ति को दिया जाता है, वह सात्त्विक माना जाता है।

मानवता की लज्जा को ढकना अत्यंत मानवीय कार्य है। दूरदराज के क्षेत्रों में और कुछ आदिवासी इलाकों में वस्त्रों की जरूरत केवल प्राथमिक आवश्यकता भर नहीं रह जाती बल्कि उससे कहीं बढ़कर उनकी गरिमा की पहचान बन जाती है। हमारा **वस्त्र बैंक** दानकर्ताओं से यह अपेक्षा करता है कि वो अपने अतिरिक्त या फिर प्रयोग किये हुए वस्त्र भी–कपड़े, चादरें, रजाई, ऊनी वस्त्र आदि साफ़ सुथरे और पहने जा सकने योग्य स्थिति में करवाकर देने के लिए आगे आएं जिससे मानव समुदाय के अन्य जरूरतमंद लोगों की मदद हो सके। इन अभावहीन लोगों तक पहुंचना भी आसान कार्य नहीं है, इसलिए इस कार्य में भी हमें आप सब का सहयोग चाहिए।

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

श्री रामकृष्ण इंटरनेशनल

श्री पब्लिकेशंस

अन्नदानं परं दानं विद्यादानमत: परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्ति: यावज्जीवं च विद्यया ।।

संस्कृत सुभाषित

अन्नदान श्रेष्ठ दान में आता है; परंतु विद्यादान उससे भी श्रेष्ठ है। अन्न से क्षणिक तृप्ति होती है और विद्या आजीवन साथ रहती है। अत: विद्यादान, सर्वश्रेष्ठ दान है।

धर्म न केवल एक दिव्य शक्ति का आह्वान करता है बल्कि इसमें संसार को बदलने का अदभुत् बल भी है जोकि विशेष तौर पर निजी, राजनीतिक और सामाजिक संकट के समय प्रत्यक्ष दिखता है।

ऐसे समय में जब नैतिक मूल्य अपना तेज खो रहे हों और धार्मिक अन्तर्धाराएँ निर्बल हो संघर्ष करने को बेबस हों, श्री पब्लिकेशंस उन आध्यात्मिक लोगों की पुकार बनना चाहता है जो एक दूसरे के साथ जुड़ना चाहते हैं और अपने आस–पास के संसार की सोच का स्तर उठाना चाहते हैं।

श्री पब्लिकेशंस की ओर से हमारा प्रयास है कि हम इक्कीसवीं सदी में सनातन धर्म का पालन करने वालों के लिए द्रुत गति के नए राजमार्ग खोलें। हम उन्हें सूचना, सवाल, खोज, बहस, चुनौती, प्रेरणा, बढ़ावा और मजबूती के स्तर पर तैयार करने का समुचित प्रयास करना चाहते हैं। इसके लिए हम पत्रिकाओं, न्यूज़लैटर, न्यूज़पेपर, पीरियोडिकल्स, किताबों, ई–पत्रिका, यू–टयूब वीडियो के अलावा प्रिन्ट, वेब, डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से कार्य करेंगे।

उन्नत परिणाम

नैतिक मूल्यों का रोपण

**यह विश्व केवल नैतिक मूल्यों की सम्पदा से ही बच सकेगा
अन्यथा पूर्ण वैभव के बावजूद, मानवता निर्धन ही रह जाएगी!**

दुर्जनः सज्जनो भूयात सज्जनः शांतिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बंधेभ्यो मुक्तः चान्यान् विमोच्येत्।।

आदि शंकराचार्य

दुर्जन सज्जन बनें, सज्जन शांत बनें।
शांतजन बंधनों से मुक्त हों और मुक्त अन्य जनों को मुक्त करें।

समाज के पहरावे में नैतिक मूल्यों का ताना–बाना होना चाहिए!

उद्देश्य — हरसंभव प्रयास में समाज की सेवा का भाव प्रमुख

रणनीति — सामाजिक जीवनदायी स्तंभों की मजबूती पर केन्द्रित

नीति — पवित्र नियमों के पालन से न्याय परायणता की स्थापना

जिम्मेदारी — कर्तव्यपालन को पूर्ण सत्यनिष्ठा के साथ निभाना

विश्वास — किसी पूर्वाग्रह–भय बिना आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना

उत्साह — परिणाम के लिए समग्र चेतना के साथ प्रयास करना

SRI RAMAKRISHNA
INTERNATIONAL

Sri Ramakrishna International

- **रजि० ऑफिसः** डी–24/387, अम्बेडकर कालोनी, 100 फुटा रोड़, छत्तरपुर, नई दिल्ली
- जानकी वल्लभ मंदिर,नारायण आश्रम,केशव नगर,वृन्दावन (मथुरा)-281121, उत्तर प्रदेश, भारत
- संपर्क: +91-9616734441
- हनुमान गढ़ी मंदिर,बलरामपुर–271201, यू.पी.
- ई-मेल आई डी: info@sriseva.org वेबसाइट: www.sriseva.org

चेक/चंदा देने के लिए लिखें - *Sri Ramakrishna International / HDFC BANK - A/C No. 50200028504209 / IFSC Code: HDFC0000942* विदेशी चंदा/दान के लिए *- SWIFT CODE - XXXHDFCINBB)*
BANK OF INDIA - A/C No. 600920110000471 / IFSC Code: BKID0006009 (दान/चंदा में आयकर अधिनियम 1981 की धारा 80जी के तहत छूट मान्य)